30/10/66 रविवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– तुम्हें पाके हमने जहाँ पा लिया है, ज़मीं तो ज़मीं, आसमाँ पा लिया है.....

(ओम)शांति! बाप बैठ करके बच्चों को समझाते हैं; क्योंकि तुम बच्चे अभी बन गए हो धन के। बाकी जो भी मनुष्य मात्र हैं वो कहा जाता है निधन के। धनी कहा जाता है बाप को। जब घर में बच्चे–बच्चियाँ लड़ते हैं तो कहते हैं–तुम्हारा कोई धनी–धोरी है, माँ–बाप हैं, जो तुमको समझावें? तुम आपस में लड़ते–झगड़ते हो। अभी ये साभी(सभी) मनुष्य मात्र आपस में लड़ते हैं, झगड़ते हैं। घर–2 में भी झगड़ा है ज़रूर। अभी बच्चे जानते हैं घर–2 में एक/दो को खून भी करते हैं। जिसको मात–पिता कहा जाते हैं यहाँ के, वो माता पिता को खून करती है, पिता माता को खून करता है। उन बिचारों को ये पता ही नहीं है कि रावण है क्या चीज़, हम इतना बड़ा पुतला बनाते हैं, जलाते हैं। कब तलक जलाते रहेंगे? है आखरीन में कौन? भला इनका जन्म कभी(कब) हुआ? जिस चीज़ को जलाया जाता है उनका जन्म ज़रूर होता है। बुत जलाते हैं ना बच्चे। ये तुम बच्चों को समझाया गया है कि आत्मा कभी जलती नहीं है, शरीर जलता है। ... बातें तुम जानते हो; क्योंकि मनुष्य, जो तुम सुनते हो, वो कभी सुना नहीं है, कभी जानते नहीं हैं। नहीं तो भारत को तो बहुत ही समझ होनी चाहिए कि भारत तो आज से 5000 बरस पहले; ये भारत को तो हैविन कहते हैं, स्वर्ग कहते हैं और ये भी जानते हैं कि श्री लक्ष्मी और नारायण का राज्य था सतयुग के आदि में। ये तो भारतवासी, जो भी पुजारी हैं देवताओं के, और कोई नहीं जानते हैं, वो ये सिर्फ जानते हैं कि ये श्री लक्ष्मी और नारायण, ये बरोबर इसको भगवती और भगवान कहा जाता है। तो ज़रूर ये भी जानते हैं कि सतयुग के आदि में श्री लक्ष्मी और नारायण का राज्य था; क्योंकि उसके पिछाड़ी जानते हैं कि त्रेता में श्री सीता और राम का राज्य था। था, कब था? इनको राज्य कैसे मिला? फिर इनका राज्य कहाँ चला गया? बिचारे कोई भी नहीं जानते हैं। इसको कहा जाता है–रचना। रचना के आदि,मध्य,अंत को अभी ये ऋषि–मुनि भी नहीं जानते हैं। कोई भी मनुष्य (नहीं) जानते हैं। तो देखो, न जानने के कारण (...), तुम अभी देखते हो दूसरे मनुष्य नहीं जानते हैं। अभी तुम जानते जाते हो। जानने से, ये नॉलेज जानने से, तुम नॉलेजफुल बनने से, फिर देखो ये बनते हैं। अभी मनुष्य मर्तबा लेते हैं ना स्कूल में। कोई बैरिस्टर बनते हैं, जज बनते हैं, कोई वकील बनते हैं, कोई डॉक्टर बनते हैं, तो पढ़ाई से बनते हैं ना। अभी देखो कोई भी मनुष्य को ये मालूम होगा कि पढ़ाई से सतयुग के ये श्री लक्ष्मी और नारायण पद पाया है। पढ़ाई से; क्योंकि भगवानुवाच्य– मैं तुम बच्चों को राजयोग सिखलाता हूँ। देखो, ये बाप कहेगा ना। ऐसा कोई मनुष्य होगा इस सृष्टि पर विद्वान,आचार्य,पण्डित जो कोई को भी ऐसे कहे कि हम तुमको ये बनाता हूँ अभी पढ़ाई से और ये पढ़ाई से बने हैं। श्री लक्ष्मी और नारायण, इनकी डिनायस्टी राज(...) एक तो नहीं पढ़े ना। स्कूल में एक थोड़े ही पढ़ते हैं। नहीं, इनकी राजधानी, सूर्यवंशी राजधानी वा चंद्रवंशी राजधानी। इन्होंने ये राजधानी कैसे प्राप्त की– कोई मनुष्य जानते हैं बच्चे? बिल्कुल नहीं जानते हैं, ज़रा भी नहीं जानते हैं, कब बादशाही ली, ये भी समझ सकते हैं सतयुग में। तो सतयुग के लिए कहा ही जाता है लाखों बरस हो गया। तो बिचारा कैसे जाने, कैसे ली? कहाँ गई? तो किसको मालूम नहीं है ना बच्चे। देखो, भारतवासियों को तो मालूम होना चाहिए ना कि यहाँ भारत में ये राजधानी थी श्री लक्ष्मी और नारायण की और सतयुग था। तो देखो, बाप भी समझाते हैं सबको भारतवासियों को यही समझाओ पहले ये चित्र। इसके लिए बाप ने अच्छा चित्र बनाते जाते हैं इनका। चित्र तो बहुत हैं, मंदिर तो बहुत हैं। देखो, बिड़ला का मंदिर भी कितने अच्छे–2 बने हुए हैं। वो लक्ष्मी–नारायण का मंदिर बहुत बढ़ाते(बनाते) हैं।..वो क्यों मंदिर का बनाते रहते हैं? क्योंकि मंदिर बनाते हैं मनुष्य ऐसे कि इनसे हमको धन मिलेगा। कि यूँ भी

लक्ष्मी–नारायण से, जिसको विष्णु, जिसको महालक्ष्मी कहते हैं, वो धन माँगते हैं। हर दीपमाला पर, अभी दीपमाला आएगी ना, तो बच्चे, श्री लक्ष्मी, उसको महालक्ष्मी कहते हैं ना, चार भुजाएँ, तो हुआ लक्ष्मी–नारायण। तो लक्ष्मी–नारायण इकट्ठे हुए ना। तो उनसे वो बिचारे धन माँगते हैं। जब धन इनको मिलता रहता है तो वो समझते हैं ... श्री लक्ष्मी ने (...), वो जानते नहीं हैं कि लक्ष्मी–नारायण दोनों हैं; पर नहीं वो बिचारे ये नहीं जानते कि लक्ष्मी ने, महालक्ष्मी (...)। महालक्ष्मी होगी तो महानारायण भी तो होगा ना साथ में। तो है भी ये लक्ष्मी का चित्र चार भुजाओं वाला जिसके साथ नारायण भी है। अभी पूजेंगे, अभी दीपमाला आती है ना, तो पूजेंगे उनको। तो पूजने से, वो कहा जाता है ना– अल्पकाल क्षणभंगुर सुख की वो जो उनकी भावना है, सब पूरी होती है। सो भी किस–2 की? जो भारत रचते हैं, जिसकी तकदीर में है, ड्रामा के प्लैन अनुसार। अभी मिसाल बाबा देते हैं कि जैसे ये बिड़ला ब्रदर्स हैं, ये बहुत बनाते हैं। अभी उनके मन में ये निश्चय है पक्का कि हमको ये लक्ष्मी से धन मिलता है; क्योंकि दीपमाला में सब कोई लक्ष्मी की पूजा करते हैं। पर है लक्ष्मी और नारायण की। उसको महालक्ष्मी कहते हैं। लक्ष्मी और महालक्ष्मी कोई दो तो नहीं होती हैं ना। ना। लक्ष्मी वा महालक्ष्मी– महालक्ष्मी, ये भी मनुष्यों को मालूम नहीं ये बात का भी। नहीं बिल्कुल, मनुष्य तो बुद्धिहीन यानी पत्थरबुद्धि हैं। पढ़ते बहुत हैं। ये बहुत शास्त्र, विद्वान–आचार्य अथॉरिटी कहते हैं; पर बाप आकर बताते हैं जितना पढ़ते हैं इतनी ही पत्थरबुद्धि जास्ती होते हैं; क्योंकि बहुत पत्थर बुद्धि होते–2, देखो अभी कह देते हैं कि शिवोऽहम्। देखो, ये पत्थर बुद्धियों का काम कि शिवोऽहम्, तत् त्वम् या कहते हैं ये पत्थर बुद्धि कि ईश्वर पत्थर–2 में है, ठिक्कर–2 में है। तो उसको बाप आकर कहते हैं– ये सभी पत्थर बुद्धि हैं। पारस बुद्धि होते ही हैं सतयुग में। पारस कहा जाता है सोने को। तो सोना तो, भारत में जब इनका राज्य था, तब इनका मंदिर ही (...), यहाँ भारत में सोने और हीरे–जवाहरों के मंदिर बनते थे। अभी वो भूल गए हैं बिचारे। वो शास्त्रों में जो लिखा हुआ है, कल्प की आयु इतनी है। भक्तिमार्ग का शास्त्र है ना बच्ची। तो बाप ने आकर समझाया– ये जो भक्तिमार्ग है, ये होता ही है दुर्गति मार्ग। सीढ़ी उतरनी पड़ती है। सद्गति तो मुझे देनी है ना। तो जब सभी मनुष्य मात्र एक तो पतित बन जावें और दुर्गति को पावें। तो ये है, पतित दुनिया इसको कहते हैं। सभी दुर्गति को पाए हुए हैं बिल्कुल ही, हर एक मनुष्य। तो बाप बैठकर समझाते हैं– जब बहुत ही दुर्गति को पाते हैं ड्रामा के प्लैन अनुसार, जब हमको फिर पुरानी दुनिया, नई दुनिया की स्थापना (...), नई दुनिया की स्थापना तो नई दुनिया में रहने वालों की भी तो स्थापना करूँगा ना। तो देखो, अभी तुम बच्चे नई दुनिया के मालिक बनने के लिए ये राजयोग सीख रहे हो, ठीक है ना और ये तुम जानते हो कि ये जो पुरानी दुनिया है, इस वॉर से, ये महाभारी महाभारत की अभी लग रही है, उनसे ये विनाश होगा। कैसे? कल्प पहले मिसल ये ड्रामा के प्लैन अनुसार; क्योंकि ये ड्रामा तो बना–बनाया है ना। बाप ने समझाया जो चक्कर है– सतयुग,त्रेता,द्वापर,कलहयुग, इसमें जो कुछ भी होता है, जो कुछ भी तुमने जाना है कि भई सतयुग में ये देवताओं का राज्य था। उसको 5000 बरस हुआ। सतयुग की आदि को 5000 बरस। पीछे आधा कल्प, 2500 बरस उन्होंने राज्य किया। अभी ये बुद्धि में तो अच्छा बैठा है ना– लक्ष्मी–नारायण और सीता–राम की डिनायस्टी ने राज्य किया। बाकी बचा 2500 बरस। ठीक है ना। अच्छा, पीछे 2500 बरस में भारत में पीछे रावण का राज्य शुरू हो जाता है, पीछे पतित बन जाते हैं। जो पावन थे सो पतित बन जाते हैं। अभी मनुष्यों को ये मालूम नहीं है कि हमको पतित किसने बनाया, हमारा राज्य जो पावन था, सो फिर पतित कैसे बना। तो बाप बैठ करके समझाया (कि) बच्चे, रावण राज्य जब शुरू होता है तब फिर ये सभी

पतित बन जाते हैं। अभी द्वापर के पीछे 2500, ऐसे समझना चाहिए 2500 बरस हुआ रावण के जन्म को। समझा ना! अच्छा, 5000 बरस हुआ शिवबाबा के जन्म को; क्योंकि उनको ही राम कह देते हैं, उनको रावण कह देते हैं। अभी उनको राम कहना नहीं चाहिए; क्योंकि राम तो है सीता का पति, वो तो उसमें है; परन्तु यहाँ तो मनुष्यों के बहुत नाम हैं। रामचन्द्र, कृष्णचन्द्र, नारायण, लक्ष्मी, लक्ष्मीनारायण– बहुतों ने नाम रख दिया है; पर कोई पता नहीं बिल्कुल ही। तो ये बच्चे तो अभी समझते हैं कि बरोबर आज से 5000 बरस पहले ये भारत में, भारत भई सोने की दुनिया थी, ऐसे कहेंगे; क्योंकि गोल्डन एज्ड वर्ल्ड कहा जाता था। अभी भी गाता है– ये भारत, प्राचीन भारत सोने की झिड़की थी; क्योंकि सोने के महल थे; क्योंकि उसको कहा ही जाता है– स्वर्ग था, वैकुण्ठ था, हैविन था, पैराडाइज़ था। अभी दुनिया को नहीं मालूम है। कुछ–2 मालूम है। देखो, बाप ने बताया ना। अभी कहते हैं कि 3000 बरस क्राइस्ट के पहले ये भारत पैराडाइज़ था। ये अंग्रेजी में कहते हैं कि भारत पैराडाइज़ था। नई दुनिया थी। अभी मनुष्य नहीं जानते हैं, भारतवासी नहीं जानते हैं कि 5000 बरस पहले ये भारत सोने की झिड़की थी। अभी बिल्कुल न जानते हैं, कुछ भी न जानते हैं। हम कहाँ से आते हैं, आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है, ये सृष्टि क्या है– कुछ भी नहीं समझते बिल्कुल। इसको कहा जाता है–तुच्छ बुद्धि। देखो, इतने बड़े–2 हैं ना, कितने प्रेजीडेण्ट्स हैं, प्राइम मिनिस्टर्स हैं, बड़े–2 विद्वान हैं, शंकराचार्य जैसे हैं, ये बिचारे कुछ भी रचता और रचना के आदि,मध्य,अंत को नहीं जानते हैं; क्योंकि इनके बड़े जो ऋषि–मुनि, वो भी ऐसे ही कहते आते हैं कि रचता और रचना के आदि,मध्य,अंत को नहीं जानते अर्थात् नेती–नेती। नेती माना न जानते हैं, न जानते हैं, न जानते हैं अर्थात् हम दोनों को न जानते हैं। डबल नास्तिक हैं; क्योंकि बाप को न जाना उसको भी कहा जाता है–नास्तिक; फिर बाप के रचना को, वर्से को भी न जाना, इसको भी कहा जाता है–नास्तिक। समझा ना! जो बाप को भी न जानें, बाप के वर्से को भी न जानें, इनहैरिटेन्स को भी न जानें, सो नास्तिक ठहरे ना बच्चे। अभी तुम, वो डबल नास्तिक, तुम भी डबल नास्तिक थे, अभी डबल आस्तिक बने हो; क्योंकि बाप को भी जानते हो, बाप से क्या वर्सा तुमको मिलता है–इनहैरिटेन्स, विश्व की बादशाही– उसको भी जानते हो। सृष्टि के सारे चक्कर के आदि,मध्य,अंत को भी तुम जानते हो। तो बाप को भी जानते हो, ये जो रचना है सतयुग से ले करके कलहयुग तक, उस रचना के भी आदि,मध्य,अन्त को जानते हो। तो तुम हो गए डबल आस्तिक और बाकी जो भी मनुष्य मात्र हैं, भले कितने भी पण्डित,विद्वान,आचार्य हैं, भले कितने भी बड़े–2 प्रेजीडेण्ट हैं, कुछ भी हैं, सभी हैं डबल नास्तिक। अभी ये तुम जानते हो ना। वो लोग तो नहीं जानते हैं ना। किसको भी कहेंगे तुम डबल नास्तिक हो, समझ नहीं सकेगा; क्योंकि गाते आते हैं कि बरोबर आगे के ऋषि–मुनि कहते थे– नेती–नेती। न बाप को जानते हैं रचता को, न रचना के आदि,मध्य,अंत को जानते हैं, तो हुए ना– डबल नास्तिक; क्योंकि बाप को न जाना तो फिर उसके वर्से को, जो मिल्कियत मिलती है, उसको भी न जानेंगे।..बाप को न जानने से मिल्कियत को भी नहीं जानते हैं। तो वो नास्तिक ही कहा जाते हैं। अभी तुम बने हो आस्तिक; क्योंकि दुनिया को मालूम ही नहीं है– हमको चाहिए क्या? बस संन्यासियों के पास जाएँगे, हमको शांति चाहिए। अब शांति किससे माँगते हैं, शांति किसको कहा जाता है, बिचारे नहीं जानते हैं कुछ भी। यहाँ शांति रखी है क्या! ये तो कर्म करना होता है ना। तो जब शरीर है तो कर्म करना पड़ेगा ना। शांति कहाँ मिलती है? शांति मिलती है शांतिधाम में। अभी शांतिधाम में तो सबको शांति चाहिए ना कि एक शांति (...)। घर में देखो, एक अगर शांत हो, दूसरे अशांत हों तो उनको भी अशांत कर देंगे। घर में दो भांती, तीन भांती, चार

भांती, समझो पाँच भांती हैं। चार भांती शांत हैं, एक भांती अशांत है ना, सबको अशांत कर देगा। तो शांति कोई यहाँ नहीं मिलती है। शांति मिलती है शांतिधाम में, घर, स्वीटहोम। ये कौन कहते हैं स्वीटहोम? आत्मा कहती है स्वीट होम। हमारा स्वीटहोम है शांतिधाम। अच्छा, फिर आत्मा कहती है, मेरा स्वीट होम जब शांतिधाम है, तो फिर जब मुझे बाप भेज देते हैं, तो मुझे कोई जहन्नुम में थोड़े ही भेज देते हैं। नहीं, बाप तो हमको भेज देंगे नई दुनिया में। तो देखो, तुम अभी तैयार हो रहे हो। तुम जानते हो, पहले हम सब जाएँगे घर, शांतिधाम में। पीछे हम जाएँगे सुखधाम के लिए; क्योंकि तुम नॉलेज पढ़ रहे हो ना बच्ची। ये पाठशाला है ना। ये कोई सतसंग नहीं है। वो जैसे ये मनुष्यों का होता है साधु,संत,महात्माओं का, वो सतसंग नहीं है। यहाँ है पाठशाला। किसकी पाठशाला? भगवान की पाठशाला। वो भगवानुवाच बच्चों के प्रति। कौन भगवान? निराकार भगवान। वो निराकार भगवान कैसे हमको कहते हैं, बात करते हैं? निराकार भगवान शरीर में प्रवेश हो तुम बच्चों से बात कर रहे हैं, आत्माओं से बात कर रहे हैं; (क्यों)कि आत्माएँ भी तो शरीर में हैं ना। आत्मा को जब कर्मेन्द्रियाँ हैं तब सुनते हैं ना। अब कर्मेन्द्रियाँ न हों आत्मा को तो सुनेंगे कैसे? आत्मा को कर्मेन्द्रियाँ न हों तो बोले कैसे?...तो आत्मा सुनती है ना बच्चे। तो आत्मा ही सुनती है। अभी आत्माओं को परमात्मा बैठ करके पढ़ाते हैं। समझा ना! ऐसे कोई भी किसको पढ़ाते नहीं हैं। बस, परमात्मा को बुलाते हैं ना– हे पतित–पावन, हे सद्गति दाता, ओ गॉड फादर, ओ लिबरेटर! ऐसे कहा जाता है ना उनको। फिर लिबरेटर, कहेंगे ओ गाइड यानी इनका अर्थ, जब अंग्रेज भी बोलते हैं अंग्रेजी में– ओ गॉड फादर, ओ लिबरेटर। किससे लिबरेट? दुःख से लिबरेटर। ओ गाइड! बस पुकारते हैं ना; परन्तु उनको ये पता नहीं है कि ये लिबरेट कैसे करते हैं, गाइड कैसे बनते हैं, ये कहाँ ले जाएगा गाइड बन करके। ये कोई भी जानते नहीं, सिर्फ चिल्लाते हैं– ओ गॉड फादर, ओ लिबरेटर, ओ गाइड! अभी देखो इस समय में गॉड फादर आया हुआ है और आय करके तुम बच्चों को गाइड करता है। तुमको कहाँ के लिए गाइड बनता है, पण्डा बनता है? शांतिधाम ले जा करके, पीछे तुम वहाँ सुखधाम में या आपे ही चले जाएँगे। समझा ना! तो बाप गाइड बनता ही है एक दफ़ा सबका। ऐसे मत समझो फिर जब तुम यहाँ आएँगे अपने स्वर्ग में, नई दुनिया में राज्य करने,..बाप गाइड नहीं करेगा। समझा ना।..बाप आते ही एक दफ़ा यहाँ हैं, गाइड करने के लिए कि चलो। कोई भी नहीं जानते हैं कि वापस हम घर कैसे जावें? क्यों? पतित बन गए हैं। साधु, संत, महात्मा सभी पतित हैं एकदम। तो पतित होने के कारण वो उड़ भी नहीं सकते हैं। जानते हैं कि निर्वाणधाम हमारा स्वीट होम है। ये भी जानते हैं कि वानप्रस्थ या निर्वाणधाम या निराकारी दुनिया या इनकारपोरियल वर्ल्ड जो सबसे ऊपर में है। समझा ना! अभी ये भी, इतना भी कोई–2 जानते हैं जो भक्त लोग हैं, पढ़ते हैं, करते हैं। इतना बुद्धि में है कि हम परमधाम में रहते हैं, निराकारी दुनिया में रहते हैं। जहाँ सूर्य–चंद्र की गम नहीं है, हम रहने वाले वहाँ के हैं, चलो। अभी यहाँ भक्ति करते ही हैं सब साधु,संत,महात्मा वहाँ जाने के लिए; परन्तु उनको मालूम नहीं है कि हम..क्यों नहीं जा सकते हैं। वो कहते भी हैं– हम पतित हैं, हे पतित–पावन! आओ। अभी ये भी नहीं समझते हैं कि हम पतित हैं; इसलिए हम जा नहीं सकते हैं वहाँ शांतिधाम में। पतित–पावन जब आए, हमको जब पावन बनावें, तब हम जा सकते हैं। समझा ना! इसलिए कहते रहते हैं– हे पतित–पावन आओ, हे पतित(...)। अभी देखो, पतित–पावन आया हुआ है। तुम बच्चों को पावन बनाने की रम्ज़ सिखलाय रहे हैं, युक्ति। तो कैसे, तुम उड़ तो सकेंगे नहीं! वापस तो कदा(चित्) कोई एक भी नहीं जा सकते हैं; क्योंकि सबको पतित बनना है। सबको सतोप्रधान,सतो,रजो,तमो में आना है ज़रूर। कोई भी

छूट नहीं सकते हैं। इस समय में सभी हैं तमोप्रधान। सब देखो, मनुष्य कितने हैं! 500 करोड़ हैं। अभी ये बच्चे जानते हैं कि बरोबर सतयुग के आदि में तो 500 करोड़ नहीं होंगे! सतयुग के आदि में जब इनका राज्य है, तो बाप ने समझाया है कि 9 लाख होते हैं। तो जभी तुम बच्चे किसको समझाते हो, उनको पहले–2 ये जाकर समझाओ कि बच्चे, ये जो राज्य था यहाँ श्री लक्ष्मी–नारायण का, उनमें कितने मनुष्य होंगे? विचार करो थोड़ा बुद्धि से कि ये नया झाड़ है, छोटा झाड़ जैसे, पीछे बड़ा झाड़ हुआ है। विचार करो, सतयुग में जब नया झाड़ था, एक धर्म था तो कितने थोड़े मनुष्य होंगे! अभी ये झाड़ जो पुराना हो गया है, मनुष्य देखो कितने बहुत हो गए हैं, अनगिनत। अभी ये जो सतयुग है और कलहयुग है। वो तो सतयुग पूरा होगा तो त्रेता, फिर द्वापर, ये जैसे कि बदली होते हैं। अभी कलहयुग (के) पीछे सतयुग आना ही है। तो ये जो इतना बड़ा झाड़ है और सतयुग में इतना छोटा झाड़ है– ये कैसे होता है? तो अभी तुमको बैठकर पढ़ाते हैं, लायक बनाते हैं तुम बच्चों को। बच्चे, अभी तुम स्वर्गवासी बनने वाले हो ना। इस समय में नर्कवासी तुम थे, तुम थे। दुनिया (के) मनुष्य भी थे, अब तुम स्वर्गवासी, नर्कवासी नहीं हो। तुम हो संगमयुग वासी। तुम अपन को अभी नर्कवासी नहीं समझ सकते हो। तुम संगमयुग वासी समझते हो। दूसरी सारी दुनिया, जो भी ब्राह्मण नहीं हैं, वो सब अपन को नर्कवासी ही समझें; परन्तु समझते कुछ भी नहीं हैं; क्योंकि जैसे बंदरों के मिसल हैं। ये मिसाल देते हैं ना बच्ची– मनुष्य या तो ये बनते हैं या तो बंदर बनते हैं। अभी इसका मिसाल भी देखो शास्त्रों में है कि नारद ने कहा। भगत था ना बच्ची। अभी इस समय की बात है। अभी भगत कोई आ करके बाप से पूछे कि बाबा, हम सतयुग में जा सकते हैं? लक्ष्मी को वर सकेंगे? तो वो बोलेगा– अपनी शक्ल देखो। पाँच विकार रूपी तुम बंदर हो। तुम बंदर सतयुग में कैसे जा सकेंगे! तो सूरत मनुष्य की, सीरत बंदर की। तो इस समय में देखो फर्क तो है ना बच्ची। जैसे इसकी शक्ल है लक्ष्मी–नारायण की, तैसे ये मनुष्यों की है सबकी। भले कोई राजा–रानी है, कोई भी हो। एक है ना, तो देखो वो मनुष्य राजा भी होगा तो भी इनके आगे चरणों में झुकेगा कि आप निराकारी, आप सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी। फिर अपन को कहें हम नीच,पापी,कपटी, मैं निर्गुण हारे में कौ गुण नाहीं। अभी इनको देखते रहेंगे– आपे तरस परोई। तो अभी इनको थोड़े ही (...), ये थोड़े ही बैठ करके पतित को पावन बनाने वाले हैं। तो उनको पता नहीं पड़ता है कि तरस किसको पड़ना होता है, रहम दिल किसको कहा जाता है। ये देवताएँ कोई रहम दिल हैं क्या? ये रहम दिल है क्या? किसके ऊपर रहम करेगा? रहम किया जाता है जब कोई दुःखी हो उसके ऊपर रहम। तो ये तो सतयुग में ये किसको रहम थोड़े ही करेगा! वहाँ तो सभी सुखी–2 हैं। तो मनुष्य को ये भी मालूम नहीं है– हम रहमदिल सिर्फ एक होते हैं, कोई देवताएँ रहमदिल थोड़े ही होते हैं। तो इतना भी बुद्धि नहीं है मनुष्य को; इसलिए कहा जाता है पत्थर बुद्धि मनुष्य बिल्कुल। तो पत्थर बुद्धियों को फिर आ करके पारस बुद्धि (...)। अभी तुम पत्थर बुद्धि से पारस बुद्धि बन रहे। अभी तुम सो ये बन रहे हो। देखो, ये पाठशाला ठहरी ना। नर से नारायण बनने की पाठशाला। तो ये पाठशाला है। ये बच्चे आते हैं यहाँ पाठशाला में। अरे भई, पाठशालाएँ तो बहुत हैं भारत में, ढेर पाठशाला हैं। अच्छा, इस पाठशाला में तुम क्या सीखने जाते हो? इस पाठशाला में हम जाते हैं नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनने के लिए; क्योंकि ये है राजयोग। ये बाप, बेहद का बाप (...)। तो ये तो किसको मालूम नहीं है ना बच्ची। कोई भी ऋषि–मुनि को

मालूम नहीं है कि राजयोग गीता का किसने सिखलाया? तो गीता खण्डन की हुई है ना बच्चे। गीता है गीता; क्योंकि यही महाभारी महाभारत लड़ाई भी है, जो गीता के साथ हुई थी। तो ये मनुष्यों को, ये मालूम बिचारों को नहीं है कि गीता का भगवान कौन था? राजयोग किसने सिखलाया था? वो समझते हैं कि श्रीकृष्ण ने आ करके राजयोग सिखलाया था। अभी भी जभी बैठ करके सुनाएँगे, तो वो तो झूठी पाठशाला ठहरी ना। जाकर कहते श्रीकृष्ण भगवानुवाच–मन्मनाभव। अर्थ समझते कुछ भी नहीं हैं, भले लिखा हुआ है– मुझ अपने एक परमपिता परमात्मा को याद करो। अभी कृष्ण तो परमपिता परमात्मा तो ठहरा ही नहीं। वो तो है कृष्ण सतयुग का शहज़ादा, जिसने ही, जो ही संगम के युग पर ये ज्ञान सुनकर, राजयोग सीखकर राजाई प्राप्त किया है। अभी उनको बनाय दिया भगवान। विश्व का रचता, मालिक बनाय दिया। अभी वो तो है ही नहीं बिल्कुल ही। तो देखो, गीता जो सुनते हैं ना, गीता देखो कितनी सुनते हैं मनुष्य। गीता के मंदिर कितने हैं? ढेर–के–ढेर हैं; परन्तु एक को भी मालूम नहीं है कि गीता का भगवान शिव है, न कि कृष्ण। अभी उनको अगर कहते भी हैं कि भाई नहीं, निराकार शिव है जो (...)। वो भी तो वही है ना। वो भी तो उनका ही रूप है ना। उसने सुनाया। अभी ऐसे मनुष्यों से कितना मत्था मारना पड़ता है समझाने के लिए। जो 63 जन्म में यही समझते आए हुए हैं कि कृष्ण भगवान, गीता के कृष्ण है भगवान। 63 जन्म से जब से रावण का राज्य शुरू हुआ है, तब से गीता जो बनाई है ना,..शास्त्र सब बनाए हैं। कोई सतयुग में शास्त्र नहीं होते हैं। द्वापर से ही शास्त्र बना रहे। तो ज़रूर पहले गीता बनाई होगी; क्योंकि ये है सर्व शास्त्रमयी शिरोमणि पुस्तक भक्तिमार्ग का। न ज्ञान मार्ग का, न भक्तिमार्ग का। ये जो भी शास्त्र हैं, सो सभी हैं भक्तिमार्ग के। कोई ज्ञान मार्ग का एक भी शास्त्र नहीं है; क्योंकि ज्ञान का सागर तो एक है ना बाप। तो जो भी शास्त्र हैं, गीता पहला नंबर, पीछे ये सब निकलते– वेद,उपनिषद। फिर ये शास्त्र रामायण... जो भी हैं– ये सभी हैं गीता के बाल–बच्चे। क्रियेशन इसको कहा जाता है। तो अब गीता जो पढ़ते आते हैं। तो बनाई है ना, हाथ से बैठ करके मनुष्यों ने बनाई है और वो बनाई है सारी झूठी। तो सभी शास्त्र बने हैं झूठे। तो देखो, शास्त्र झूठे पढ़ने से, यज्ञ,तप,दान,पुण्य,तीर्थ ये सभी शास्त्रों में लिखा हुआ है, ये कर्मकाण्ड सभी शास्त्रों में लिखा हुआ है, ये शास्त्र पढ़ते–2 सीढ़ी उतरते आए हैं। सीढ़ी उतरते 63 सीढ़ी उतर के अभी आ करके पिछाड़ी हुई है। अभी फिर 84 पूरी हुई। अभी फिर चलना है पहले सीढ़ी पर। तो देखो, तुम पहले सीढ़ी पर जाने के लिए, ये बनने के लिए, सतयुगी पहले नंबर में लक्ष्मी–नारायण बनने के लिए यहाँ आए हो पढ़ने के (...)। अभी से सभी लक्ष्मी–नारायण तो नहीं बनेंगे ना। जो अच्छी तरह से पुरुषार्थ करेंगे (...)। सो है तो राजयोग ना बच्चे, नर से नारायण या नारी से लक्ष्मी बनने का; परन्तु राजधानी स्थापन हो रही है ना बच्चे। ये राजधानी किसने स्थापन की? देखो, कभी भी कोई के मनुष्य के बुद्धि में नहीं आएगा, सतयुग में ये राज्य करते थे, ये राजधानी आई कहाँ से? जबकि कलहयुग में खाने का भी नहीं, अन्न भी नहीं खाने का नहीं और कलहयुग में इतने करोड़ों मनुष्य (...)। सतयुग में ये, ये क्या तलसम, किसने किया ये तलसम? कि कलहयुग में अनेक धर्म हैं, देखते हो ना– अभी अनेक धर्म हैं, अनेक मनुष्य और अभी खाने के लिए भी नहीं मिलने का है। लड़ाई सामने खड़ी है, महाभारत की लड़ाई। तो उनको, आँखें थोड़े ही खुलती हैं उनकी, ये लड़ाई आगे भी लगी थी। किसको भी पता नहीं है ये महाभारत की (...)। कहते हैं..बरोबर कभी–2, पाँच हजार बरस पहले ये महाभारत की लड़ाई लगी थी। लगी थी; पर क्या हुआ

था, बिचारा कोई भी कुछ नहीं जानते हैं। सिर्फ तुम ही जानते हो बच्चे, जो ब्राह्मण होते हैं; क्योंकि ये नॉलेज सिर्फ तुम ब्रह्मा मुखवंशावली, ब्राह्मण और ब्राह्मणियाँ मुखवंशावली (...)। वो तो ब्राह्मण कुखवंशावली हैं ना। सो तुमको आ करके बाप ने एडॉप्ट किया है ब्रह्मा द्वारा। तुमको एडॉप्ट करके भगवान बैठ करके पढ़ाते हैं तुमको। निराकार भगवान, ज्ञान का सागर। क्या पढ़ाते हैं? तुमको ये बनाते हैं।..तो पढ़ाई अच्छी तरह से पढ़नी चाहिए ना। सो भी पढ़ाई कोई बहुत थोड़ी बड़ी है बच्ची, ना, बिल्कुल। अच्छा, राजाई प्राप्त करनी है तो पढ़ाई अच्छी चाहिए। अगर प्रजा में जाना है तो बस बाप कहते हैं– सिर्फ मन्मनाभव, मुझे याद करो और अपने वर्से को याद करो, नई दुनिया को याद करो। मुझे याद करने से शांतिधाम में चले जाएगा और फिर नई दुनिया को याद करने से स्वर्ग में चले जाएगा; क्योंकि बाप नई दुनिया स्थापन करते हैं। तो बाप को याद करो, नई दुनिया को याद करो तो स्वर्ग में आ जाएँगे। हाँ, अगर बैठ करके पढ़ेंगे अच्छी तरह...बहुतों को पढ़ाएँगे तो फिर राजा–रानी बन सकेंगे, यदि बहुत सर्विस करेंगे तो। जितनी सर्विस करेंगे, सेवा करेंगे रूहानी (...)। तो तुम हो रूहानी सोशल वर्कर्स। बाकी सारी दुनिया, भारत कहो, वो सभी है ज़िस्मानी सोशल वर्कर्स। जो भी मनुष्य मात्र हैं तुम्हारे सिवाय, क्षुद्र सम्प्रदाय, शूद्र सम्प्रदाय, ये सभी हैं ज़िस्मानी सोशल वर्कर। तुम सिर्फ हो रूहानी सोशल वर्कर। समझा ना बच्चे। तुम रूहों को, आत्माओं को ज्ञान देते हो। वो ज़िस्म को सेवा करते हैं, तुम आत्मा की सेवा करते हो। इसको कहा जाता है–स्प्रिच्युअल सेवा यानी आत्मा की सेवा करना। तुम्हें सिखलाता भी है, स्प्रिच्युअल फादर सिखलाते हैं; मनुष्य नहीं सिखलाते हैं। मनुष्य को भगवान कहना महान पाप है। समझा ना! ये जो मनुष्य को भगवान समझते आए हैं, पत्थर में, ठिक्कर में, फलाने में, इसलिए इतने भारतवासी पाप आत्मा बन गए हैं। देखो, इस समय जैसे पाप आत्मा और कंगाल भारत जैसा और कोई नहीं है। तो फिर बाप आएगा ना। देखो, बाप आ करके फिर भारत को स्वराज बनने देते हैं। अभी पढ़ाई हुई ना बच्ची ये। ये है पाठशाला कैसी? मनुष्य से देवता बनने की, नर से नारायण बनने की और बनेंगे भी ज़रूर। विनाश तो सामने खड़ा हुआ है। बाकी तुमको वो चैलेंज देते हैं ना कि 10 बरस के अंदर तुम पढ़ करके होशियार हो जाएँगे और भविष्य के लिए राजाई ले लेते हो। जब तुम तैयार हो जाएँगे, विनाश शुरू हो जाएगा। यहाँ आएँगे। तुम आएँगे तो स्वर्ग में आएँगे।..इसलिए इसको कहा जाता है– अभी नई दुनिया स्वर्ग स्थापन हो रहा है यानी तुम यहाँ अभी स्वर्गवासी बनने के लिए पढ़ रहे हो; क्योंकि पहले तुम नर्कवासी थे सब; क्योंकि ये नर्क है। अभी तुम हो संगमयुग में, बाकी सभी हैं कलहयुग में; क्योंकि बाप संगमयुग में आते हैं ना। तो तुमको मालूम पड़ता है, जिस–2 को ब्राह्मण बनना होगा वो आएँगे, वो आ करके संगमयुग पर पढ़ेंगे। जो यहाँ नहीं आएँगे संगमयुग पर, ब्राह्मण न बनेंगे (...)। तुम ब्राह्मण हैं संगमयुगी; शूद्र हैं कलहयुगी। तुम न नर्कवासी हो, न स्वर्गवासी हो। नर्क से तुम्हारा लंगर उठा हुआ है। तुम स्वर्ग तरफ जा रहे हो। बाकी सभी पड़े हुए हैं। उनमें से आते रहेंगे, आते रहेंगे। ब्राह्मण ज़रूर बनेंगे। ब्राह्मण न बनेंगे तो देवता कभी नहीं बनेंगे। ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण और ब्राह्मणी न बनेंगे तो वर्सा शिवबाबा से कैसे लेंगे? समझा ना बच्ची! शूद्रों को नहीं मिल सकता है, ब्राह्मणों को मिलता है। तो शूद्र जो ब्राह्मण बनने होंगे देवताएँ, वो ज़रूर आएँगे यहाँ। आकर..कुछ–न–कुछ सुनेंगे। सुनेंगे ना। अच्छा सुना ना, तो भी स्वर्ग का वो प्रजा में आ जाएँगे ज़रूर। एक दफ़ा आ करके सुनते हैं ना बच्चे अच्छी तरह से, तो जो अच्छी तरह सुनते हैं (...) और फिर जबकि

योगी बनें, याद की यात्रा में तत्पर रहें। फिर जितना याद करेगा इतना विकर्माजीत बनेगा। वो जो खाद पड़ी हुई है, वो जलती जाएगी। तो मूल बात है तुम बच्चों के लिए–याद में रहना शिवबाबा की। मनुष्यों को कोई को भी याद करने का नहीं है। बुद्धि आत्मा को अभी ज्ञान हुआ तो मुझे बाबा को याद करना है। काम यहाँ करना है; पर याद उनको करना है; क्योंकि तुम आशिक हो ना उस माशूक के। सभी भगत आशिक हैं एक भगवान माशूक के। तो कहते हैं– तुम भले कम कार करो, खान–पान लो, मेरे को याद करते रहो तो तुम्हारी ख़ाद निकल जाए। पीछे शरीर छोड़ेगा तो स्वर्ग में चले आएँगे। तुमको ये सिर्फ मालूम है कि हमको भगवान पढ़ाते हैं फिर। भगवानुवाच; पर न कृष्ण भगवानुवाच, शिव भगवानुवाच। कृष्ण को भगवान नहीं कहेंगे। उनको कहेंगे स्वर्ग का पहले नंबर का शहज़ादा। फिर जब युगल बनते हैं तब बनते हैं लक्ष्मी और नारायण। समझा ना! जो भी स्वर्ग के हैं, उन्होंने शिवबाबा से वर्सा लिया है स्वर्ग। ये तुम जानते हो, दुनिया थोड़े ही जानती है। ...पता ही नहीं है इतना कि बाप आए हुए हैं बच्चों को विश्व की (...), देखो ये विश्व के मालिक थे ना। ये हैं, मालूम है तुमको? (किसी ने कहा–हाँ) अभी नहीं हैं। 84 पूरा हुआ है। अभी फिर जो भी पूज्य थे, पुजारी बने हैं, अब पुजारी से पूज्य बन रहे हो। तो तुमको, जो पुजारी होते हैं, वो मत्था टेकते हैं। तुम तो अभी पूज्य बनते हो ना बच्चे। ...बाप को नमस्ते की जाती है घर में; परन्तु तुम तो बच्चे बन गए हैं। अभी बच्चे थोड़े ही घर में बैठकर नमस्ते करते हैं। ना।..खुशी होनी चाहिए कि अभी आज हम यहाँ हैं, कल स्वर्ग के मालिक बनेंगे और बना रहे हो, इतना तक तुमको उठाना है और बाबा समझ जाते हैं, कितने दिन से जाती हो? (किसी ने कहा–दो/तीन महीने हो गए) दो/तीन महीने से। पूरा नहीं राज़ को समझा है अभी। बाप के साथ बुद्धि का योग कम है; क्योंकि बाप कहते हैं शिवबाबा कि तुमको हमने सतोप्रधान बनाया, फिर 84 जन्म के बाद तुम तमोप्रधान बन गए हो। अभी तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने के लिए मैं युक्ति बताता हूँ कि तुम अपन को आत्मा समझो कि हम सतोप्रधान आत्मा थीं, सो तमोप्रधान बनी हैं। अभी हम तमोप्रधान से सतोप्रधान कैसे बनें? सो बाप को याद करने से, शिवबाबा को याद करने से तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेंगी, सतोप्रधान दुनिया का मालिक बन जाएँगी। ये अभी तुम्हारी बुद्धि में ठीक बिठाया नहीं है और न..बैठा है। तुम अपन को आत्मा समझो और यही समझो कि हम पहले–2 घर में रहते थे शांतिधाम में। पीछे बाबा ने हमको स्वर्ग में भेजा। स्वर्ग में हम जन्म लिया। ये सीढ़ी बनी हुई है। तुम्हारे पास सीढ़ी भी होगी। अभी तुम पतित बने हो, अभी पावन बनने के लिए, काम करते, घर में पकाते–रखते एक तो पवित्र रहना है, दूसरा– शिवबाबा को याद करना है। तभी तुम ऐसे वर्सा पाय सकती हो। ये पूरी तरह समझो, मैं लिखूँगा चिट्ठी कि तुम लोग अभी पूरा सिखलाया नहीं है, जो मेरे पास सैम्पल्स आए कि हम जाते हैं। उन्होंने ये राजयोग का पूरा समझा नहीं है। पीछे न समझा है तो तुम श्री लक्ष्मी (...) या राजाई तो पाएँगी नहीं, जाकर प्रजा में जन्म लेंगी। तुमको प्रजा में तो जन्म नहीं लेना है ना, राजा बनना है ना; क्योंकि राजयोग है, मनुष्य से राजाओं का राजा बनने का योग है, प्रजा नहीं। इसको कहा ही जाता है–राजयोग, राजा बनने का। सिकीलधे...वो जाने वाले हैं क्या, अभी छुट्टी लेंगे? मात–पिता, बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग।